National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 129-132
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

पूजा द्विवेदी
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence:
पूजा द्विवेदी
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

संस्कृतिक आदान-प्रदान व राष्टीय एकता के माध्यम के रूप में अनुवाद

पूजा द्विवेदी

शोध सार

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥

(यह सूक्त राष्ट्र की विविधता में एकता को रेखांकित करता है। जैसे एक परिवार के सदस्य अलग-अलग विचार रख सकते हैं, लेकिन फिर भी एक साथ रहते हैं, वैसे ही पृथ्वी भी विभिन्न भाषा-भाषी और धर्मों को मानने वाले लोगों को बिना किसी भेदभाव के धारण करती है। यह मातृभूमि की समृद्धि और भरण-पोषण की कामना करता है।)

अनुवाद केवल एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि दो संस्कृतियों, दो विचारधाराओं और दो हृदयों के बीच सेतु का कार्य करता है । भारत जैसे बहुभाषी और विविध संस्कृति वाले देश में अनुवाद की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती हैं। साहित्य में अनुवाद भी एक विधा की तरह स्वीकार किया गया । गद्य विधाओं में जिस तरह पत्रकारिता एक विषय बन गया, उसी तरह अनुवाद भी एक अनुशासन के रूप में स्वीकार हुआ । हिंदी के प्रतिष्ठित अनेक रचनाकार, साहित्यकार, कवि, गद्यकार उन्होंने अपनी पहचान एक साहित्यकार के साथ-साथ अनुवादक के रूप में भी बनाई। जिस तरह साहित्य में राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय एकता, इस पर प्रचुर मात्रा में लेखन हुआ। कवियों ने इस राष्ट्र की एकता के अनेक आयाम उद्घाटित किए, मार्ग प्रशस्त किया। इसी तरह अनुवाद ने भी अखिल भारतीय स्तर पर पूरे देश को, पूरे देश की संस्कृति को उद्घाटित करते हुए संस्कृति के मूल में एक ही तत्व है। जो पूरे देश को अनेक भाषा-भासी प्रयोक्ताओं को, नागरिकों को जोड़ता है । उसी तरह भाषा और साहित्य की तरह अनुवाद भी वह समेकित संस्कृति का उद्घाटन बनता है । अनुवाद में और अनुवादकों ने, अनूदित कृत्य के माध्यम से अनूदित कार्य के माध्यम से इस बात को रेखांकित किया। हम पूरे देश की एकता को संगठन को शक्ति मानते हुए उसका स्वागत और अभिवादन करते हैं।

बीज –शब्द _ अनुवाद, सांस्कृतिक, राष्टीय एकता, भारतीय समाज, बहुभाषिता, विविधता।

मूल लेख

बाल्यकाल से ही पढ़ते आए हैं की **'एकता में बल है'**इसीलिए यह सूत्र आज भी उतना ही प्रासंगिक है । क्योंकि जब-जब हम एकता छोड़ते हैं, विभक्त होते हैं, बट जाते हैं। तब तक हमारी सभ्यता हमारी संस्कृति हमारे समाज हमारे देश पर संकट आता है । इसलिए इस तरह की अनेक सूक्तियां के माध्यम से हम पूरी वसुधा को एक कुटुंब की तरह देखते और देखना भी चाहते हैं। इसलिए हम कहना यह चाहते हैं कि अगर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम एकत्रित रहे, मिलजुल कर रहे, संगठित होकर समाज के कल्याण के निमित्त समस्त कार्यों का निष्पादन करें। निसंदेह हमें हमारे लक्ष्य की प्राप्ति होगी। हम सफल होंगे और भारत देश पूरी दुनिया में एक निराला एक विलक्षण ऐसा देश है, जिसमें विभिन्नताएं भी एकता की तरफ ले जाती है। बहुत सी नदियां अंततः आकर समुद्र में तिरोहित होती और वही भारतीय संस्कृति है, जिसमें यह समस्त राज्यों, क्षेत्र, समुदायों, जातियों, धर्मों और भाषाओं की संस्कृतियों उसी एक भारतीय संस्कृति में आकर तिरोहित होती हैं या भांति भांति के खान-पान है। अलग-अलग क्षेत्र में, राज्यों में, ऋतु के आधार पर मौसम के आधार पर हम देख सकते हैं कि खानपान वहां पर अपनी

पहचान बनाते हैं। अलग-अलग वेशभूषा है। कही एक प्रकार की महिलाओं की वेशभूषा है, कहीं दूसरे प्रकार की है, ऐसे ही पुरुषों की वेशभूषा, बाल समुदाय की वेशभूषा, कृषकों की वेशभूषा उनको धारण करने या ग्रहण करने की पद्धति की है । अनेक जातियां हैं, अनेक धर्म और संस्कृतिया हैं और आचार विचारों में भी वैविध्य है। किंतु इन सब का तिरोहण अंतत या समन्वय अंतत भारतीय संस्कृति में दिखाई देता है। हम पहले भारतीय हो जाते हैं। बाद में समुदाय, अपने धर्म, अपनी जाति आदि की बात फिर करते हैं। **ऐसा ही जैसे एक माला के धागे में अनेक रंग बिरंगे मोतियो को पिरोया जाता है या एक गुलदस्ते में रंग-बिरंगे पुष्पों को सजाया जाता है। ठीक ऐसे ही यह भारत भूमि यह भारतीय संस्कृति, यह भारतीय भूगोल यह इसी बात का प्रतीक है कि विविधता में एकता।** हमारे सोच में, दृष्टि में, आचार में व्यवहार में, कुछ भी हो लेकिन राष्ट्र हमारे लिए राष्ट्रीय एकता हमारे लिए सदा सर्वदा सर्वोपरि रही है। अनेकता में एकता के दर्शन हम करते रहे है। यही एकता इस राष्ट्र की रीड है। किसी भी राष्ट्र की एकता के अंतर्गत भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है ।

भाषा के जन्म के साथ-साथ अनुवाद का भी जन्म होता है। हम जानते हैं कि बाल्यकाल से जन्म से, बच्चा मां की गोद में जब रहता है तो बिना औपचारिक शिक्षण, प्रशिक्षण के भी वह भाषाई प्रयोग करने लगता है। आत्मसात करने लगता है और सीखने भी लगता है। इस समय अनुवाद भी उनकी भाषा के साथ जुड़कर उसकी संप्रेषणीयता को बल देता है। मुख मुद्रा को समझता है। अनुवाद के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अपनी संस्कृति के साथ-साथ अन्य संस्कृतियों का भी बोध करता है। यही समेकित संस्कृति का लक्षण भी है। हम अनेक संस्कृतियों को यानी कंपोजिट कल्चर के रूप में जब अनेक संस्कृतियों को आत्मसात करते हैं। उसे अपने जीवनचार्य या दैनिकचार्य का हिस्सा बनाते हैं। बहुत से भिन्न-भिन्न भाषा भाषियों से संवार और संपर्क करते हैं, विचार विनियम करते हैं बनाते हैं तो इसी समेकित संस्कृति का पोषण होता है। राष्ट्रीय एकता के अभाव में किसी भी राष्ट्र का विकास असंभव है इसलिए चाहे वह कृषि हो, धर्म हो जाती हो, भावना हो या अन्य किसी प्रकार के उद्योग आदि की बात करें । अखिल भारतीय या अखिल राष्ट्रीय स्तर पर एकत्व का भाग दिखाई देता है तो वह राष्ट्र चहुमुखी और बहुमुखी विकास की ओर उन्मुख होता है। उसके बिना उसे विकास की उसे गति की परिकल्पना हम नहीं कर पाते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय एकता का मूल आधार सांस्कृतिक एकता को भी माना जाता है।

साहित्य में अनुवाद की भूमिका

अनुवाद ने पूरे राष्ट्र को ,पूरे देश को अनेक प्रकार से जोड़ने का काम किया है। अनुवादकों ने अनुदित रचनाओं के माध्यम से हमारी सांस्कृतिक एकता को सामाजिक अभिन्नता को वृव्यक्त किया और उसे बलशाली भी बनाया। बहुत सी गद्य और पद्म की रचनाओं के अनुवाद की एक सशक्त सुदीर परंपरा भारत में रही है। इन अनूदित रचनाओं को यदि हम देखें बहुत सी धार्मिक रचनाओं, सांस्कृतिक सामाजिक रचनाओं का, साहित्यिक रचनाओं का और इसी प्रकार लोक जीवन, लोक साहित्य, लोक संस्कृति, लोकगीत लोक नाटक आदि ऐसी बहुत सी रचनाओं के अनुवाद किए जाते रहे। उन्हें के आधार पर हम अखिल भारतीय स्तर पर यह महसूस करते रहे कि हम किसी भी भाषा भारती समुदाय के हो, किसी भी क्षेत्र राज्य से संबंध हो, लेकिन हमारी जो मूल आत्मा है वह भारतीय है। **हम प्रत्येक भाषा के तथ्य उसकी संवेदना से जुड़ भी जाते हैं और तमाम तरह के ऐसे उदाहरण हमें मिलते हैं जिसमें कालजयी रचनाएं और रचनाकार अनूदित हुए, तो उनका अभिनंदन अखिल भारतीय स्तर पर हुआ। तुलसीदास उसमें से एक उदाहरण है उनकी महाकाव्यात्मक एक महत्वपूर्ण लोक प्रसिद्ध ऐसी रचना जो धार्मिक भी है, जो साहित्यिक भी है, जो सांस्कृतिक भी है। वह रामचरितमानस है। अवधी भाषा में लिखी गई रचना है,** राम कथा पर आधारित है। हालांकि राम-चरितमानस से पहले वाल्मीकिकृत रामायण एक महाकाव्यात्मक रचना हमारे पास संस्कृत में उपलब्ध है। लेकिन हम दृष्टि डालें तो रामचरितमानस पूरे भारतीय मानस, को पूरै भारतीय समाज को एक नई दिशा देने वाली रचना बनती है। **इसलिए घर घर में रामचरित मानस जैसी रचना पहुंची। अनुवाद की ही देन है कि रामचरितमानस का उड़िया, तमिल, पंजाबी, मराठी, मैथिली, सिंधी आदि इन सब भाषाओं में रामचरितमानस का विधिवत और बहुत उत्कृष्ट कोटि का अनुवाद हुआ।** इसी प्रकार जैन साहित्य, नाथ साहित्य और बौद्ध साहित्य को देखे उनमें अनुवाद की एक सशक्त परंपरा रही जो पूरे देश को जोड़ती रही। हिंदी के वीर काव्य, श्रृंगार काव्य, प्रेम काव्य, भक्ति काव्य सब में हमें अनुवाद के बीज दिखाई देते हैं। कविता के साथ-साथ गद्य के अनुवाद की परंपरा रही। नाटकों, निबंधों और पत्रकारिता की दुनिया जो इस युग में शुरू हुई उसमें अनुवाद की अपनी भूमिका रही। **रविंद्रनाथ ठाकुर ने अपनी रचना गीतांजलि से लोकप्रियता हासिल की। रविंद्रनाथ ठाकुर की कविताओं को रविंद्र कविता कानन के नाम से सूर्यकांत त्रिपाठी निराला निराला ने अनूदित किया। निराला अच्छे अनुवादक भी रहे हैं। जयशंकर प्रसाद की महाकाव्यकम कृति जो विश्व स्तरीय रचना आज भी स्वीकार किए जाते हैं।** रामचरित मानस के बाद यदि किसी रचना ने लोकप्रियता हासिल की है तो वो कामायनी है। जिन्होंने भारत और ओखल भारतीय स्तर पर उपलब्ध कराया। ये सब साहित्यकार जितने मूल रचना से ख्याति प्राप्त करते हैं उतना ही इनकी रचनाओं के अनुवाद से भी इन्हें ख्याति अखिल भारतीय और वैश्विक स्तर पर मिलती है। **अमृतलाल नागर का बहुत प्रसिद्ध और बहुत चर्चित उपन्यास बूंद और समुद्र हैं जिसमें लखनऊ की संस्कृति को वहां की जीवन शैली को चित्रित किया। उसका भी अनुवाद हुआ।** मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार के अनेक उपन्यास जैसे सुनीता, कल्याणी, सुखदा और त्यागपत्र का अनुवाद जिनका हिंदी जगत में और जिन भाषाओं में अनुवाद हुए अंग्रेजी व भारतीय भाषाओं में उनका भी स्वागत और अभिनंदन हुआ। यहां तक कि शेक्सपियर

जैसी विदेशी लेखकों की रचनाओं के अनुवाद हुए। इस तरह हम देख सकते हैं कि इतने बड़े रचनाकारों की तेलगु, मलयालम, कन्नड़, इन सब में भी अनुवाद की एक परंपरा दिखाई देती हैं। अनुवाद वर्तमान दौर में एक सशक्त और प्रभावशाली विधा के रूप में सामने आई। पूरे देश के अलग- अलग राज्यों में, अलग अलग भाषाओं में लिखी गई रचनाओं में हम अनुवाद के माध्यम से भिन्न भिन्न भाषा भाषी समुदाय की वहां के सामाजिक, नागरिक समुदाय, वेशभूषा, खान-पान, रीति रिवाज, इन सबको देखते हैं। जिनमें पूरे राष्ट्र की एकता के भाव को सर्वाधिक महत्व गया ।

मीडिया मे अनुवाद मे की भूमिका

संचार और सूचना के क्षेत्र में मीड़िया के क्षेत्र में जो अनुवाद की एक सशक्त सुधीर परंपरा मिलती है। प्रिंट मीडिया के अंतर्गत बहुत सारे समौचार पत्र और पत्रिकाएं जो राष्ट्रीय स्तर, क्षेत्रीय स्तर पर और सामुदायिक स्तर पर निकलते हैं। उनमें भी हम जो सामग्री प्रकाशित होती है। वह चाहे सूचनात्मक हो ज्ञानात्मक हो या साहित्य हो उनमें भी राष्ट्रीय एकता को प्रमुखता दी जाती है। अनेक प्रकार की पुस्तक जो प्रिंट मीडिया के अंतर्गत आता है किसी कार्यालय, मंत्रालय या बैंक बीमा कंपनी के तमाम तरह की जो उनके मैन्युएल्स से उनके विवरण है वह प्रकाशित होते हैं। इन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है। पोस्टर, बैनर, वॉल राइटिंग है यह सब प्रिंट मीडिया के विभिन्न रूप है। इन सब में जो सामग्री मौलिक या अनूदित रूप में छपती है उनके मूल में एक मंतव्य एक उद्देश्य रहता है और वह राष्ट्र सर्वोपरि इसको ध्यान में रखते हुए मुद्रण आदि किया जाता है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन, फिल्में कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल वॉकी टॉकी, ट्विटर, ब्लॉग राइटिंग आदि आते हैं। बहुत से ऐसे माध्यम इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के रूप में हमारे सामने आ गए। दूरदर्शन रेडियो, मोबाइल, कंप्यूटर ऐसे अनेक पक्ष दिखाई देते हैं जहां सूचनाओं का आदान प्रदान होता हैं। वहां भी राष्ट्र की गरिमा को केंद्र में रखकर सामग्री का प्रसारण होता हैं। प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र एक शसक्त माध्यम रहा है। समाचार पत्र न मिले तो जीवन कुछ छूटने स बोध होता हैं। हिंदी का पहला समाचार पत्र प्रकाशित हुआ था, उदंत मार्तंड नाम से। राष्टीय स्वाधीनता आंदोलन में समाचार पत्रपत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वर्तमान समय में भी हर प्रदेश से अनेक प्रादेशिक पत्र – पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। यहां भी राष्ट्रीय एकता पर बल दिया गया। आज लगभग 55000 से अधिक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन नियमित रूप से हो रहा है। इस प्रकार समाचार पत्र -पत्रिकाएं अनुवाद के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में आगे बढ़ रही है। कुछ समाचार पत्रों के नाम अगर ले तो बंगाल के बंगाल के आजकल, गुजराती के गुजराती समाचार, दिव्य भास्कर, कन्नड़ के जनतावासी, मराठी के केशरी देशदूत आदि । **रेडियो भी सशक्त माध्यम रहा है, कुछ समय के लिए खामोश हो गया था। लेकिन विगत कुछ वर्षों में जब से प्राइवेट चैनल शुरू हुए तब से रेडियो पुनर्जीवित हो उठा। हमारे प्रधानमंत्री जी का 'मन की बात ' का कार्यक्रम रेडियो ने ही पूरे देश और दुनिया में लोकप्रिय बनाया।** वर्तमान समय में रेडियो के 200 से भी अधिक प्रसारण केंद्र हैं। लगभग देश के हर राज्य में इसका प्रसारण होता हैं। भारत के अनेक बोलियों और भाषाओं में इसका प्रसारण होता हैं। इस प्रकार रेडियो सम्पूर्ण देश की जनता को एकता के सूत्र में बांधता है। आज के दौर में केबल के आने से भारत में चैनलों की भरमार हो गई। टेलीविजन में जब स्थानीय भाषाओं में जब कार्यक्रम आने लगे, इसलिए अब वो बंगला, मराठी, तेलुगु, उड़िया, कन्नड़ सबके अलग अलग चैनल हमे टेलीविजन पर दिखाई देते हैं। इसलिए रेडियो टेलीविजन दोनों ने क्रांतिकारी काम किया। पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का कामकाम किया। पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया। राष्टीय पर्व 26 जनवरी, 15 अगस्त सामाजिक सांस्कृतिक पर्व हैं। होलां और दीपावली, वैशाखी, लोहड़ी, संक्रांति, पोंगल बहुत से ऐसे पर्व हैं जो समय -समय पर इन सब का प्रसारण होता हैं। तो पूरा देश इससे जुड़ता है। राष्ट्रीय एकता की झलक मिलती है। बंगला हिंदी अनूदित धारावाहिको में अगर हम **टेलीविजन पर सीरियस के रूप में बहुत लोकप्रिय हुए उसमें श्रीकांत, चरित्रहीन, मुजरिम हाजिर ऐसी बहुत सी रचनाएं हैऔर संस्कृत से हिंदी मे या भारतीय भाषाओं से हिंदी में देखते हैं तो रामायण, महाभारत, चाणक्य और नीति कथाएं हमारे अलग -अलग राज्यों में जिन्होंने अपनी लोकप्रियता से पूरे भारत को अभिभूत किया जैसे मालगुडी डेज, भारत एक खोज, यह भी अनूदित रचना पर बना हुआ सीरियल है।** टीपू सुल्तान, रामायण, महाभारत आदि हैं। हिंदी में ही नहीं अपितु अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। बल्कि इस तरह के रचनाओं में सिनेमा ने भी अनूदित रूप को जनसामान्य तक पहुंचाने का काम किया। इसलिए राष्टीय एकता की दृष्टि से देखे कौन बनेगा करोड़पति, हम लोग, बुनियाद जैसे सीरियल देख लें, इन सबने हमारी संयुक्त परिवार की प्रथाओं, वैवाहिक परंपराओं को हमारे रीति रिवाजो को अखिल भारतीय स्तर पर पहुंचाया। कौन बनेगा करोड़पति में जितनी ख्याति हिंदी में उपलब्ध की उतनी ख्याति अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ। टीवी के अतिरिक्त कंप्यूटर एवं इंटरनेट भी राष्ट्रीय एकता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इंटरनेट में अनुवाद की भूमिका

इंटरनेट वसुदेव कुटुंबकम की अवधारणा को सार्थक सिद्ध कर रहा है कि भारतीय सांस्कृतिक मूल मंत्र है। यह पूरी विश्व इसकी पृथ्वी एक कुटुंब परिवार है यह बाजार या पैसे के कारण नहीं है, यह व्यापार के कारण नहीं है। भारतीय संस्कृति को पूरी वसुधा को एक

संयुक्त परिवार की तरह दिखती है। उसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति कही भी, कोई भी सूचना कुछ क्षणों में इंटरनेट से पा लेता है। इसलिए जनसंचार के सभी माध्यमों में अनुवाद राष्ट्रीय एकता को सशक्त बनाता है। नाटक, उपन्यास, कहानी, सिनेम, विज्ञापनों आदि अनेक ऐसे देखे हैं जिसमें राष्ट्रीय एकता को चित्रित किया है।

विज्ञान में अनुवाद की भूमिका।

विज्ञान के अंतर्गत अनेक विषय समाहित होते हैं। भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान प्राणी विज्ञान, अभियांत्रिकी आयु विज्ञान, गृह विज्ञान, कृषि विज्ञान चिकित्सा विज्ञान आदि। भारत में वैज्ञानिक अनुवाद के स्तर दो प्रकार की दिखाई देते हैं। भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी से अनुवाद और विभिन्न भारतीय तथा विदेशी भाषाओं से अंग्रेजी में अनुवाद। आज विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन और अनुसंधान की मूल भाषा अंग्रेजी रही है। NEP के आने से नेशनल एजुकेशन पॉलिसी के आने से स्थितियां बदल रही हैं। अब भारतीय भाषाओं से हिंदी में और हिंदी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद को प्रोत्साहित किया जा रहा है। एमबीबीएस जैसी उपाधि हिंदी के माध्यम से या प्रबंधन की उपाधि हिंदी माध्यम से विधि की उपाधियां भी हिंदी माध्यम से उपलब्ध हो रही है तो पूरा देश उनसे उपकृत हो रहा है। आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। विज्ञान के क्षेत्र में, तकनीक के क्षेत्र में उन्नति कर रहा है।

निष्कर्ष- अनुवाद हमें राष्ट्रभाषाओं के प्रति, हमारे देश की समस्त राज्यों की भाषाओं के प्रति और दायित्व निर्वाह की प्रेरणा देता हैं। अनुवाद ओर अनुवादकों ने इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया है। आज पूरा देश चाहे वह राष्ट्रगान हो, चाहे राष्ट्रीय गीत हो और राष्ट्रीय प्रतीक हो चाहे वह राष्ट्रीय तमाम तरह की महत्वपूर्ण उपलब्धियां हो धार्मिक स्थल हो, सांस्कृतिक स्थल हो, रीति रिवाज हो, उन सब के बारे में अवगत कराने का काम उनसे उपकृत होने का काम अनुवाद और अनुवादकों के माध्यम से होता हैं इसलिए कह सकते हैं कि राष्ट्रीय एकता में अनुवाद और अनुवादकों की भूमिका वंदनीय है और देश इसी से गति प्रगति के लिए अग्रसर है।

संदर्भ सूची

१. अथर्ववेद -(19.41.1)

२. .प्रदीप सक्सेना, अनुवाद सैद्धान्तिकी, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), स. 2000, q. 1271

३. १. जी० गोपीनाथन्, अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, पृ. 091

४. प्रदीप सक्सेना, अनुवाद सैद्धान्तिकी, पृ. 129।

५. अनुवाद (अनुवाद के आईने में संस्कृतियों की पहचान प्रभाकर माचवे), . जी० गोपीनाधन, अनुवादः सिद्धात एवं प्रयोग, पृ. 121

६ अनुवाद (अनुवाद और अनुवादक की प्रतिष्ठा-पूरन चन्द टण्डन), पृ. 211

७.अनुवाद (अनुवाद के आईने में संस्कृतियों की पहचान प्रभाकर माचवे), पृ. 3061